DRC Approved

Dr. Kumari Shashi — Shashi 11.12.24

Dr. Mary S. Soreng — 11.12.24

खोरठा के संस्कार गीत : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशिका

Archana Kumari 11/12/2024

डॉ0 अर्चना कुमारी

सहायक प्राध्यापक

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

Supervisor

Dr. Archana Kumari

Assistant Professor

University Deptt. of Khortha

Ranchi University, Ranchi

Mob. – 7488116313

Email. – archanapdfw@gmail.com

शोधार्थी

Abhishek Kumar

अभिषेक कुमार

यू०जी०सी, नेट/जे०आर०एफ

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

Mob – 9102814835

Email – ak.abhishek122@gmail.com

शोध प्रारूप

खोरठा के संस्कार गीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका

संस्कार शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'धन्' प्रत्यय लगने से निष्पन्न हुआ है। संस्कार शब्द का मूल अर्थ हैं, शुद्धीकरण। मूलतः संस्कार का अभिप्राय उन कृत्यों से हैं, जो किसी व्यक्ति को अपने समुदाय का पूर्ण रूप से योग्य सदस्य बनाने के उद्देश्य से उसके शरीर मन और मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते हैं। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है। संस्कार से ही हमारा सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन पुष्ट होता है और समाज सभ्य हो जाता है। संस्कार मनुष्य को पाप और अज्ञान से दूर रखकर आचार-विचार और ज्ञान-विज्ञान से संयुक्त करता है।

भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार बताए गए हैं, लेकिन खोरठा भाषी क्षेत्र में मुख्य रूप से तीन संस्कर (जन्म संस्कार, विवाह संस्कार और मृत्यु संस्कार) पाए जाते हैं। इन संस्कारों के अनुसार जीवन यापन करने से मनुष्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। झारखण्ड राज्य प्रकृति-प्रदत्त सौंदर्य, नदी, नालों, जल-प्रपातों, सघन वनों के लिए ही नहीं बल्कि बहुभाषी बहुजाति एवं विभिन्न संस्कृति के लिए भी विख्यात है। खोरठा क्षेत्र के विभिन्न सांस्कारिक अनुष्ठानों में संस्कार गीतों की अनिवार्यता है। खोरठा भाषा के संस्कार गीत सदियों से मौखिक रूप से ही गये जाते रहे हैं।

खोरठा क्षेत्र के संस्कार गीत का अध्ययन करने से पूर्व हमंे लोकगीत के बारे में जानना होगा।

लोकगीत:

भारतीय लोगों के जीवन में संगीत हमेशा से एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत ने लोक संगीत के विभिन्न रूपों में अपना भरपूर योगदान दिया है। भारत के लगभग प्रत्येक क्षेत्र का अपना लोक संगीत हैं, जो वहाँ की स्थानिक संस्कृति तथा जीवन के तौर-तरीकों को प्रतिबिंबित करती है।

लोकगीत वह गेय रचनाएँ हैं, जिसमें अशिक्षित ग्रामीण जनता की अभिव्यक्ति होती है और जिसमें जीवन दर्शन भी होता है, लोकगीत के अंतर्गत

आएगा। लोकगीत हमारे जीवन विकास की गाथा है। उनमें जीवन के सुख-दुःख, मिलन-विरह, उतार-चढ़ाव की भावनाएँ व्यक्त हुई है। इनमे ंजीवन की सरल अनुभूतियों एवं भावों की गहराई है। लोकगीतों का सबसे बड़ा गुण यह है कि इनमें सहज स्वभाविकता एवं सरलता है। इनमें सुख-दुःख, प्रेम और करूणा के विविध के स्वर गूंजते हैं तो कही कन्या की विदाई के अवसर पर वियोग जनित पीड़ा की करूणा अभिव्यक्ति होती है।

प्रेरणाः

खोरठा भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के अंतर्गत खोरठा भाषा में स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान मुझे इस भाषा साहित्य को गहराई से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। अपने अध्ययन काल में मैं इस विषय के सहायक पाठ्य सामग्रियों के अभाव को महसूस किया। इसी दौरान मुझे लगा कि इस विषय पर एक नवीन शोध की आवश्यकता है और मेरी दृष्टि ''खोरठा के संस्कार गीतः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय की ओर आकृष्ट हुई, जब मैं इस संबंध में अपने शोध निर्देशक से चर्चा की, तो उन्होंने भी उक्त विषय पर कार्य करने हेतु प्रेरित किया। साहित्यिक महत्व एवं उपयोगिता को देखते हुए मैंने इस विषय को समझा। अतः यह विषय पीएच॰डी॰ शोधकार्य हेतु उपयुक्त लगा।

परिकल्पनाः

परिकल्पना, परि और कल्पना से शब्दों के मेल से बना है। परि का अर्थ चारों ओर तथा कल्पना का अर्थ अध्ययन या मनन करना है। इस प्रकार परिकल्पना का अर्थ किसी समस्या से संबंधित समस्त अध्ययन कर संभावित समाधान पर विचार करना है। परिकल्पना का निर्माण तो, हम इसलिए करते हैं कि अध्ययन कार्य में हमें निश्चित रूप से क्या करना है, उसके संबंध में हमें एक अन्दाजा लग जाए और सभी पहलुओं पर अपना ध्यान को विखरा देने की गलती न करके अपने अनुसंधान क्षेत्र को सीमित करके प्राकल्पना के अनुसार अध्ययन विषय के एक विशिष्ट पहलू पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। परिकल्पना एक सामाजिक या कार्यवाह समान्यीकरण होता है, जिसकी सव्यता का परीक्षण शोध कार्य के बाद संभव हो पाता है।

जब मैं खोरठा साहित्य का अध्ययन कर रहा था, उसी समय खोरठा साहित्य के अन्य तत्वों के साथ खोरठा संस्कार गीतों का भी अध्ययन किया।

अध्ययन के पश्चात् इस पर गहन चिंतन किया तो मुझे नये दृष्टिकोण की पहचान हुई, जो इसके अन्य तत्वों के अपेक्षा इस अंश को अलग करती है। जो हमारे खोरठा समाज और खोरठा साहित्य के विकास में उपयोगी हो सकता है। यही कारण है कि मैं इस विषय पर अपना शोधकार्य करने के लिए आकर्षित हुआ।

शोधकार्य के महत्वः

- खोरठा भाषा के संस्कार गीतों को बचाना और लोक साहित्य मे गीतों का महत्व को अत्यधिक बढ़ाना।
- संस्कार गीतों पर शोध कार्य से रचनाकारों का रूझान (उत्साह) बढ़ेगा साथ ही खोरठा भाषा का संचयन, संकलन, प्रकाशन और मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त होगी।
- रचनाकरों और शोधार्थी का आत्मबल का विकास होगा।
- लोक साहित्य के इस भाषा का चतुर्दिशाओं में विकास, संस्कार गीतों के माध्यम से होगा।
- इस शोध प्रबंध का प्रकाश में आने पर समस्त खोरठा भाषा साहित्य एक संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा।
- खोरठा लोक साहित्य में संस्कार गीतों का भण्डार बढ़ेगा।
- खोरठा साहित्य का महत्व तथा उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त होेगी।
- खोरठा क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के जीवन-दर्शन एवं मनोवृत्ति का पता चलेगा।

शोधकार्य का प्रासंगिकताः

प्रासंगिकता का अर्थ यह है कि कोई सूचना, क्रिया या चीज किसी मामलों या मुद्दे से कितना जुड़ी हुई है। आदिकाल से संस्कार गीतों की परम्परा अविरल गति चली आ रही है। भावना तथा चिंता का संजयोन, कल्पना एवं सत्य का संश्लेषण तथा सुसंबंधित चेतना का नाम ही मानव जीवन है। जहाँ भी मानव का निवास होता है, वहाँ उसके संस्कार गीतों का भंडार भी अवश्य होता है। अतः संस्कार गीत गाने एवं सुनने की परम्परा उतनी ही पुरानी है, जितनी पुरानी उनके जीवन है। मानव जीवन में ऐसे कई क्षण और घटनाएँ आती है जो थोड़े समय के लिए आकर भी हमें चमत्कृत कर जाती है। संस्कार गीत उन तमाम क्षणों एवं

घटित घटनाओं की विवरणात्मक यादें हैं। मनुष्य केवल अनुभवी ही नहीं, रागात्मक भाव जन, जग और जीवन मेें संयोजित क्रियाओं को प्रकट करने के लिए व्याकुल रहता है। अतः मनुष्य रचना कर देता है। अर्थात् संस्कार गीत हमारे जीवन के दर्पण की तरह है, जो हमारे जीवन को गतिशील बनाए रखती है। इसी क्रम में खोरठा लोक साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के रचनाएँ हो रहे हैं, जिसके कारण खोरठा भाषा और साहित्य का विकास काफी तेजी से अग्रसर होता जा रहा है। साथ ही खोरठा लोकगीत भी निरंतर सामने आ रही है। जिसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक पहलुओं का मिश्रण देखने को मिल रही है, जिसको अपने शोधकार्य के द्वारा सामने लाना है।

चुनौती:

किसी भी शोधार्थी के लिए एक वैज्ञानिक समस्या का प्रतिपादन निश्चित रूप से एक कठिन कार्य है। फिर भी वह इस कठिन कार्य के लिए कुछ ऐसी स्रोतों का सहारा ले सकता है जिससे उसे समस्या को ढुंढने में मदद मिल सके। किसी भी कार्य को पूरा करने के दौरान कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मुझे भी अवश्य ही इस शोधकार्य को सम्पन्न करने में हर तरह की समस्याओं से गुजरना ही होगा। इस कार्य को पूरा करने हेतु मुझे संपूर्ण खोरठा क्षेत्र का चतुर्दिक भ्रमण कर संबंधित लोकगीतों का संग्रह करना पड़ेगा। खोरठा क्षेत्र के सुदूरवर्ती गाँवों में निवास करने वाले लोगों से साक्षात्कार लेना पड़ेगा। खोरठा क्षेत्र के सुदूर गाँवों में जाकर तथ्यों की खोज करना और जन-साधारण से भौतिक रूप से संपर्क स्थापित कर साक्षात्कार करना आसान एवं आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु मुझे हर संभव चुनौतियों एवं कठिनाईयों का सामना करना होगा क्योंकि यह भी सत्य है जिस काम को करने में कठिनाईयाँ नहीं होती है उस काम की महत्ता भी कम होती है।

शोध प्रविधि:

शोध की प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक सर्वेक्षण आधार पर होगी। यह प्रस्तावित तथ्यों पर आधारित होता है। इस प्रकार यह सुस्पष्ट हो जाता है, कि शोध कार्य बिल्कुल भी काल्पनिक तरीके से एकत्रित नहीं किया जा सकता है, इसके लिए विश्वसनीय तथ्यों, सूचनाओं, आँकड़ों आदि को संकलित करने की निम्नलिखित प्रविधियाँ हो सकती है-

1. **साक्षात्कार विधि**
2. **अवलोकन विधि**
3. **प्रश्नावली विधि**
4. **विश्लेषणात्मक विधि**

उपकरण:

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है-

1. **मोबाईल**
2. **कैमरा**
3. **कम्प्यूटर**
4. **इंटरनेट**
5. **पेपर इत्यादि।**

शोध प्रारूप

खोरठा के संस्कार गीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है-

प्रथम अध्याय

1. **लोकगीत की अवधारणा**
2. **लोकगीतों का वर्गीकरण**
   - **क)** **पर्व-त्यौहार गीत**
   - **ख)** **संस्कार गीत**
   - **ग)** **श्रम गीत**
   - **घ)** **ऋतु गीत**
   - **ङ)** **खेल गीत**
   - **च)** **सामान्य गीत**
3. **खोरठा लोकगीतों की सामान्य विशेषताएँ**

द्वितीय अध्याय

खोरठा क्षेत्र के संस्कार और संबंधित गीत

1. **संस्कार का अर्थ एवं विविध संस्कार**
2. **खोरठा संस्कार गीत का परिचय**
3. **खोरठा संस्कार गीतों का वर्गीकरण**
4. **खोरठा संस्कार गीतों की विशेषताएँ**
5. **खोरठा संस्कार गीतों का महत्व**
6. **अवसरगत खोरठा संस्कार गीत**

तृतीय अध्याय

जन्म संस्कार गीत

1. **शिशु स्नान गीत**
2. **छठियारी गीत**
3. **मुँह-जुठी गीत**
4. **मुंडन गीत**

चतुर्थ अध्याय

विवाह संस्कार गीत

1. **विवाह संस्कार गीतों का सामान्य परिचय**
2. **विवाह संस्कार गीत की विशेषताएँ**
3. **विवाह संस्कार गीतों का वर्गीकरण और अवसर/उपलक्ष्यगत रूप**

पंचम् अध्याय

खोरठा विवाह गीतों में वर्ण्यविषय एवं विविध चित्र

1. **विवाह गीत के विविध चित्रण**
   - **क**) **नारी चित्रण**
   - **ख**) **प्रकृति चित्रण**
   - **ग**) **आर्थिक चित्रण**
   - **घ**) **सामाजिक चित्‌रण**
2. **आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विवाह गीत**
3. **विवाह गीतों का सामाजिक पक्ष**

षष्ठ अध्याय

विवाह गीतों में काव्य-सौंदर्य

क. **कला पक्ष**

1. **छंद विधान**
2. **अलंकार योजना**
3. **प्रतिक**
4. **बिंब**
5. **भाषा**

ख. **भाव पक्ष**

1. **रस**
2. **भाव**

सप्तम् अध्याय

संस्कार गीतों की राग-रागिनीयाँ

1. **राग**
2. **लय**

3. **शैली**

4. **वाद्‌ययंत्र**

उपसंहार

परिशिष्ट

i) **आधार ग्रंथों की सूची**

ii) **सहायक ग्रंथों की सूची**

iii) **पत्र-पत्रिकाओं की सूची**

iv) **साक्षात्कार**

v) **चित्रावली**

नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशिका

Archana Kumari
11/12/2024
डॉ0 अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

Supervisor
Dr. Archana Kumari
Assistant Professor
University Deptt. of Khortha
Ranchi University, Ranchi
Mob. – 7488116313
Email. – archanapdfw@gmail.com

शोधार्थी

Abhishek Kumar
अभिषेक कुमार
यू०जी०सी, नेट/जे०आर०एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

Mob-9102814835
Email – ak.abhishek122@gmail.com

आधार ग्रंथों की सूची

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	वर्ष
1ण्	केसरी, डॉ0 विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी गीतों में शृंगार रस	किशोरी विद्‌या निकेतन भैदनी वाराणसी	1994
2ण्	कुमारी, डॉ0 अर्चना	खोरठा शिष्ट साहित्य एक अध्ययन	प्यारे केरकेट्टा फाउण्डेश चेशयर बरियातु राँची	2015
3ण्	गौंझू, डॉ0 गिरिधारी राम गिरिराज	झारखण्ड का लोक संगीत	झारखण्ड झरोखा राँची	2019
4ण्	गोस्वामी, जनार्दन व्यथित	हिलोर	गोस्वामी टोला बालीडीह बोकारो	2001
5ण्	चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश्वर प्रसाद	रस दोष छंद अलंकार निरूपण	-	-
6ण्	चौधरी, डॉ0 सच्चिदानंद	हिन्दी काव्य शास्त्र में रस-सिद्धांत	अनुसंधान प्रकाशन कानपुर	1965
7ण्	झा, ए0के0	छंद रस अलंकार	झारखण्ड झरोखा	2011
8ण्	झा, ए0के0	खोरठा लोक साहित्य	झारखण्ड जनजातीय कल्याण विभाग	2012
9ण्	जैतली, रमाशडर	शंृंगार रस विश्लेषण	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर	1972
10ण्	शर्मा, डॉ0 योजना	राजस्थानी लोक गीतों की संरचना	विवेक पब्लिशिंग हाउस जयपुर	2006

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 **ओहदार**, **बी.एन.**, **खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास**, **खोरठा भाषा साहित्य अकादमी**, **रामगढ़**, 2007

2 **गोस्वामी मनपुरन**, **महुआ खोरठा गीत संग्रह**, **वसुदेव गोस्वामी चौरा बोकारो**, 2000

3 **नागर विश्वनाथ प्रसाद**, **खड़याम तोर मधुर गीत**, **पूजा प्रकाशन**, **धनबाद**, 2004

4 **प्रमाणिक**, **शिवनाथ**, **दामोदरेक कोरां**´, **खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्**, **भभुआ**, **बोकारो**, 1986

5 **प्रमाणिक**, **शिवनाथ प्रधान संपादक**, **सेंवाती खोरठा गीत संग्रह**, **खोरठा भाषा विकास समिति भेण्डरा**, **बोकारो**, 2000

6 **पानुरी श्रीनिवास**, **आँखिक गीत**, **यूनिक प्रिंटिंग प्रेस कल्याणपुर**, **धनबाद**, 2011

7 **महतो**, **चितरंजन** ‘**चित्रा**’, **महाराइ खोरठा लोकगाथा**, **खोरठा साहित्य संस्कृति अकादमी रामगढ़**, 2013

8 **सुकुमार**, **झिंगुर खोरठा गीत संग्रह**, **खोरठा भाषा विकास समिति भेण्डरा**, **बोकारो**, 2004

9 **सुकुमार**, **मदनभेरी खोरठा गीत संग्रह**, **अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद् भेण्डरा बोकारो**, 2010

10 **महतो**, **घनश्याम**, **झींगा फूल**, **सहिया मिलन चिरूडीह**, **नवाडीह**, **बोकारो**, 2000

11 **गरीब**, **शिवनंदन पांडेय**, **खोरठा लोकगीत**, **बोकारो खोरठा कमिटि**, **बोकारो**, 1994

खोरठा पत्र-पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ	संपादक	प्रकाश
खोरठा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
तितकी	विश्वनाथ दसौंधी 'राज'	कतरासगढ़, धनबाद, 1977-78
तितकी	ए.के.झा	ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
मातृभाषा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
लुआठी	गिरिधारी गोस्वामी 'आकाशखूँटी'	बालीडीह, बोकारो, 1999
सहिदान	फाल्गुनी मरीक कुशवाहा	गिरीडीह, 2002
सहिया	अनिल कुमार 'विस्थापित'	बोकारो, 2002